खण्ड-342, अंक-4
शुक्रवार, 9 भाद्रपद, शक संवत् 1901
(31 अगस्त, 1979 ई0)

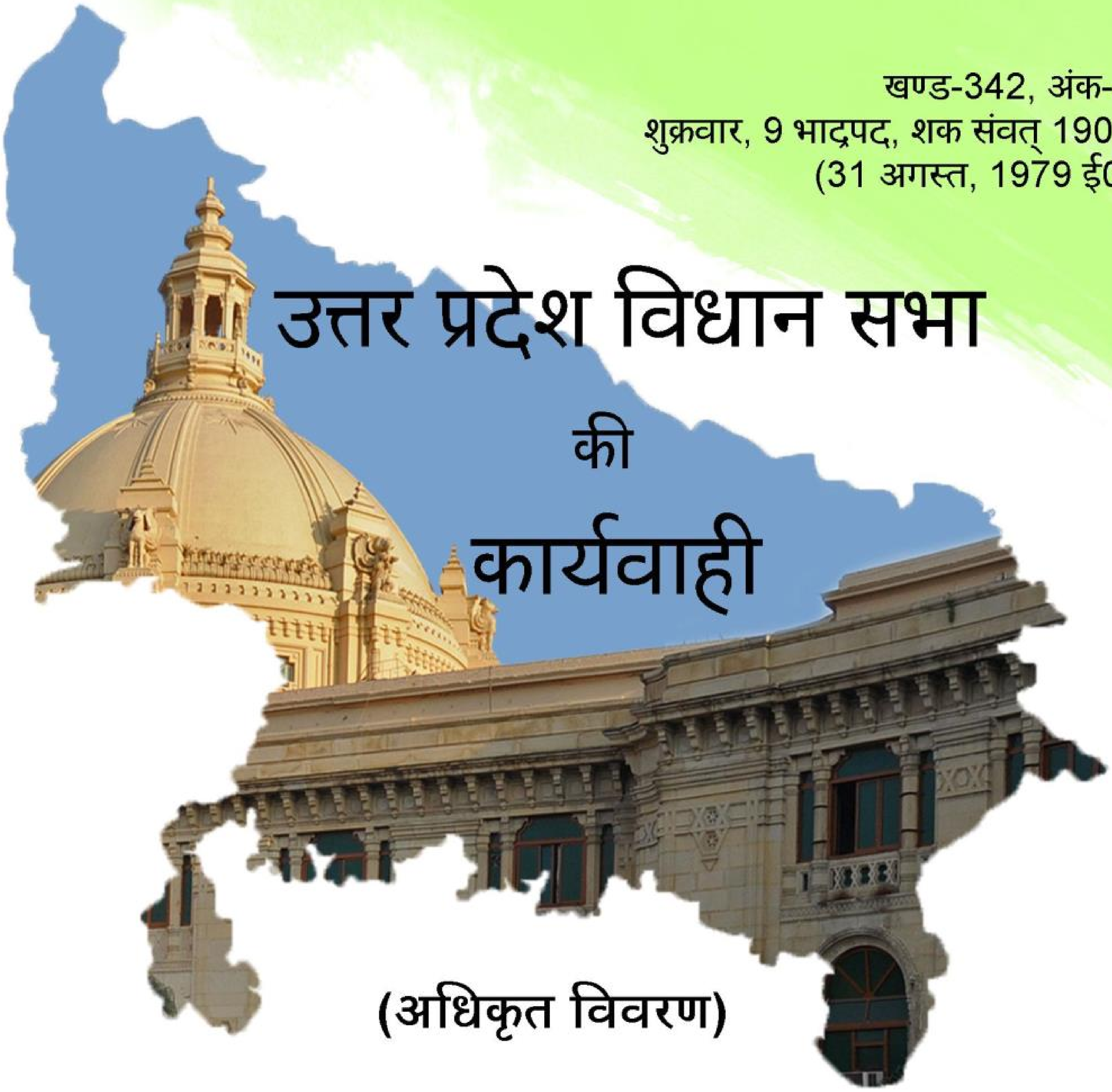

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 342 में 6 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)
1980

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 25 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ- संख्या
उपस्थित सदस्य	283–287
आज प्रश्नोत्तर काल स्थगित किये जाने का प्रस्ताव स्वीकृत ..	288
विधान सभा सदस्य, श्री रवीन्द्र सिंह के निधन पर शोकोद्गार ..	288–295
आज का कार्यक्रम तीन सितम्बर को लिये जाने की सूचना ..	295

विधान सभा उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शुक्रवार, दिनाँक 31 अगस्त, 1979

विधान सभा की बैठक सभा मन्डप, लखनऊ में 11 बजे दिन में उपाध्यक्ष, श्री जगन्नाथ प्रसाद की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य–354

अकबर हुसैन, श्री
अजब सिंह, श्री (जिला मुजफ्फरनगर)
अजब सिंह, श्री (जिला सहारनपुर)
अजीत सिंह सेठी, श्री
अठई राम, श्री
अनवार अहमद चौधरी, श्री
अनवार अहमद समदनी, श्री
अब्दुल वहीद, श्री
अब्दुल हफीज श्री
अब्दुल हलीम खां, श्री
अवधेश कुमार श्रीवास्तव, श्री
अवधेश नरायन, श्री
अवनीश कुमार सिंह, श्री
अशफाक अहमद, श्री
अशफाक अहमद खान, श्री
अशर्फी लाल यादव, श्री
अश्वनी कुमार चतुर्वेदी 'राकेश', डाक्टर
आबिद अली, श्री
आरिफ मोहम्मद खां, श्री
इसमाईल, श्री
ईशदत्त यादव, श्री
ईश्वर प्रसाद, श्री
उदय नारायण सिंह, श्री
उमाकान्त बाजपेई, श्री (उर्फ भैय्या जी)
ऊदल, श्री
एदल सिंह, श्री
ए0 सी0 ग्राइस, श्री
ओंकार नाथ, श्री
ओंकार सिंह, श्री
ओम प्रकाश, श्री (उर्फ राम मिलन सिंह)
ओम प्रकाश सिंह, श्री
कन्हैयालाल गुप्त, श्री
कन्हया लाख सोनकर, श्री
कबूल सिंह, श्री
कमला प्रसाद वर्मा, श्री
कमला प्रसाद सिंह, श्री
करन सिंह, श्री
कल्याण सिंह, श्री
काजी मोहम्मद मुहिउद्दीन, श्री
कालीचरण, श्री
कासिम हसन, श्री
किशन लाल, श्री
किशन लाल दिलेर, श्री
कुदसिया बेगम, श्रीमती (बेगम ऐजाज रसूल)
कृपा शंकर आर्य, श्री
कृष्ण कान्त मिश्र, श्री
कृष्ण कुमार पालीवाल, श्री
कृष्णवीर सिंह कौशल, डाक्टर
कृष्ण स्वरूप, श्री
कृष्णा राय, श्री
कैलाश नाथ सिंह, श्री
कौशल किशोर, श्री
खान मोहम्मद आतिफ खां, श्री
गगा प्रसाद, श्री
गंगा सहाय यादव, श्री
गजी प्रसाद, श्री
गजाधर प्रसाद आर्य, श्री
गजेन्द्र सिंह, श्री
गणेशदत्त बाजपेयी, श्री
गनेशीलाल चौधरी, श्री (वकील)
गया प्रसाद मेहरोत्रा, श्री (उर्फ मन्ने बाबू)
गिरधारी लाल, श्री
गिरीश चन्द्र तिवारी, श्री
गुन्जेश्वर, श्री
गुरुदत्त सोलंकी, श्री
गुरु प्रसाद, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

गुलाब सेहरा, श्री
गोकरन प्रसाद, श्री
गोविन्द सिंह नेगी, श्री
गोविन्द सिंह मेहरा, श्री
गौरी शंकर एडवोकेट, श्री
चन्द्रपाल, श्री
चन्द्रपाल सिंह, श्री
चन्द्र भान मौर्य, श्री
चन्द्रभूषण सिंह, श्री
चन्द्रशेखर सिंह, श्री
चन्द्रसेन सिंह, श्री
चेतराम गंगवार, श्री
चौधरी नौनिहाल सिंह, श्री
छज्जू सिंह, श्री
छेदा सिंह 'चौहान', श्री
छोटेलाल, श्री
छोटे लाल निर्भय, श्री
जंग बहादुर सिंह पटेल, श्री
जगदम्बा प्रसाद सिंह, श्री
जगदीश, श्री
जगदीश प्रसाद, श्री
जगदीश प्रसाद त्रिवेदी, श्री
जगदीश सिंह, श्री
जगन्नाथ प्रसाद, श्री
जगन्नाथ सिंह, श्री
जगन्नाथ सिंह परमार, श्री
जयराम, श्री
जय शंकर पाँडेय, श्री
जवाहरलाल, डाक्टर
जसवीर सिंह, श्री
जागन सिंह, श्री
जागेश्वर, श्री
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल, डाक्टर
जौहरी लाल त्रिवेदी, श्री
ज्ञानेन्द्र स्वरूप, श्री
तेजभान सिंह, श्री
तेजभान सिंह, कुंवर
तेज सिंह, श्री
त्रिलोक चन्द्र, श्री
त्रिवेनी सिंह, श्री
दयाराम भास्कर, श्री
दशरथ सिंह, श्री
दिवाकर विक्रम सिंह, श्री
दीनानाथ सेवक, श्री
दीप नारायण, श्री
दुक्की प्रसाद, श्री
दुर्ग विजय सिंह, श्री
देवकी नन्दन, श्री
देव कुमार, श्री
देवबहादुर सिंह, श्री
देवराम, श्री
देवेन्द्र दत्त शास्त्री, श्री
धरम राम, श्री
धर्मदत्त वैद्य, आचार्य
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला बिजनौर)
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला मेरठ)
नंगाराम, श्री
नन्दराम, श्री
नन्हें लाल कुरील, श्री
नरेन्द्र सिंह, श्री
नरेश चन्द्र, श्री
नरेश पाल सिंह, यादव, श्री
नाथूराम शिक्षक, श्री
नारायण दत्त तिवारी, श्री
नारायण सिंह श्री
नेतराम सिंह, श्री
नेम सिंह चौहान, श्री
पद्माकर लाल श्रीवास्तव, श्री
पुरुषोत्त कौशिक, श्री
पूरन चन्द्र, श्री
पूरन लाल, श्री
प्यारे लाल, श्री
प्यारे लाल शाक्य, श्री
प्रताप सिंह, श्री
प्रताप सिंह 'पुष्पवान', श्री
प्रभू दयाल यादव, श्री (एडवोकेट)
प्रेम नारायण अहेरवार, श्री
प्रेमवती, श्रीमती
फजलुर्रहमान, अन्सारी, श्री
फजलुलबारी श्री (उफ बन्नेभाई)
बंशाली सिंह, डाक्टर
बच्चा पाठक, श्री
बदन सिंह, श्री
बनारसी दास, श्री
बनारसी दास चाँदना श्री
बरफिया लाल जुबाँठा 'अरविन्द, श्री
बलदेव, श्री
बलबीर सिंह, श्री (जिला मेरठ)
बलबीर सिंह, श्री (जिला मैनपुरी)
बशीर अहमद, श्री

बसंत, श्री
बाँकलाल, श्री
बाके बदरे, श्री
बाबू राम प्रभाती, डाक्टर
बाबू राम वर्मा, श्री
बाबू राम शुक्ल, श्री
बाबू लाल वर्मा, श्री
बाबू लाल विद्यार्थी, श्री
बाबू लाल 'सरोज', श्री
बाबू सिंह, श्री (जिला अलीगढ)
बाबू सिंह, श्री (जिला मुजफ्फरनगर)
बाल कृष्ण, श्री
बिन्दू लाल, श्री
बिशुन दयाल, श्री
बिहारी लाल हंस, श्री
बुद्धूराम, श्री
बृजबल्लभ, सिंह श्री
बृजलाल, श्री
बेचू राम, श्री
बेनी प्रसाद माधव, श्री
बेनी प्रसाद वर्मा, श्री
बजनाथ प्रसाद कुशवाहा, श्री
बृज बल्लभ, श्री
भगवत दयाल, डाक्टर
भगवती चरण निर्मोही, श्री
भगवती प्रसाद सिंह, श्री
भगवान दीन कुशवाहा, श्री
भाभी, श्री
भारत सिंह, श्री
भारत सिंह चौहान, श्री
भीमा प्रसाद, श्री
भीषम, श्री
मंगल देव, श्री
मंगल राम प्रेमी, श्री
मकबूल अहमद, श्री
मथुरा प्रसाद पांडेय, श्री
मधुकर दिघे, श्री
मन्जूर अली खां, श्री (उर्फ शम्भू खां)
मन्जूर अहमद, श्री
मन्ना लाल, श्री
मन्नी लाल, श्री
मन्नू राम, श्री
मन्नू लाल द्विवेदी, श्री
मलिक मो0 कमाल यूसुफ, श्री
मलिखान सिंह, श्री
मसूदुल हसन नोमानी, श्री
महेन्द्र रिपुदमन सिंह, राजा
महेन्द्र सिंह, यादव, श्री
माधव, श्री
मानपाल सिंह एडवोकेट, श्री
मान सिंह आजाद, श्री
मालती शर्मा, श्रीमती
मिठाई लाल, श्री
मित्रसेन, श्री
मुकन्दी सिंह, श्री
मुकीमुर्रहमान, श्री
मुनीन्द्र पाल सिंह, श्री
मुफ्ती जलील अहमद, श्री
मुहम्मद खलील उल्लाह कुरेशी, श्री
मुहम्मद रफी खां, श्री
मूल चन्द्र, ठाकुर
मोअज्जिज अली बेग, डाक्टर
मोती लाल देहलवी, श्री
मोहन लाल, श्री
मोहन लाल, त्रिपाठी श्री
मोहन सिंह, श्री (जिला रायबरेली)
मोहम्मद उसमान, श्री
मोहम्मद शमीम अन्सारी, श्री
मौजीलाल कुरील, श्री
यशपाल सिंह, श्री
रघुबर दयाल वर्मा, श्री
रणजीत सिंह, श्री
रणजीत सिंह 'जूदेव' श्री
रणवीरसिंह, श्री
रफी उल्लाह, श्री
रफीक अहमद खां, श्री
रमा शंकर कौशिक, श्री
रमेश चन्द्र, श्री
रवीन्द्रनाथ तिवारी, श्री
राघवराम मिश्र, श्री
राजकिशोर तिवारी, श्री
राज कुमार शर्मा, श्री
राज नरायन, श्री
राजनाथ सिंह, श्री
राजपति मिश्र, श्री
राजबली तिवारी, श्री
राजब्रजराज सिंह, श्री
राजमंगल तिवारी, श्री
राजमंगल पाण्डेय, श्री
राजेन्द्र कुमार गुप्त, श्री

राजेन्द्र चौधरी, श्री
राजेन्द्र प्रसाद चौधरी, श्री
राजेन्द्र सिंह यादव, श्री
राजेश कुमार सिंह, श्री
राधश्याम शर्मा, श्री
राम अधार यादव, बाबा
राम आसरे, श्री
राम आसरे अग्निहोत्री, श्री
राम आसरे वर्मा, श्री
राम कृष्ण, श्री
राम जनम, श्री
रास जनम राय, श्री
राम जी, श्री
रामदत्त जोशी, श्री
राम दयाल, श्री
राम दुलारे, श्री
राम देव दुबे, श्री
रामदेव यादव, श्री
राम नरायन वर्मा, श्री
राम नरेश पाण्डेय, श्री
राम नरेश यादव, श्री
रामपति, श्री
राम प्यारे, श्री
राम फेर, श्री
राम बरन वर्मा, श्री
राम रतन सिंह, श्री
रामरति देवी, श्रीमती
राम लखन, श्री
राम शिरोमणि दुबे, श्री
राम सजीवन, श्री
राम सरन सिंह, कुंवर
राम सागर, श्री
राम सिंह, श्री
रामेश्वरनाथ चौबे, श्री
राव मुश्ताक अहमद खां, श्री
रियासत हुसैन, श्री
रेवती रमण रस्तोगी, श्री
रेवती शरण मौर्य, श्री
लक्खी सिंह, श्री
लक्ष्मण सिंह, श्री
लक्ष्मी नरायन, श्री
लक्ष्मी शंकर यादव, श्री
लाल दास, श्री
लीलवत सिंह, श्री
वंशगोपाल चतुर्वेदी, श्री
विक्रमा राय, श्री
विजय राज सिंह, श्री
विद्या शंकर, श्री
विमला राकेश, श्री
विष्णु प्रताप सिंह, श्री
वीरेन्द्र चतुर्वेदी, श्री
वीरेन्द्रपति यादव, श्री
शंकर सिंह, श्री
शतरुघ्न प्रकाश, श्री
शफीकुर्रहमान बर्क, श्री
शमशाद अहमद, हाजी
शम्भूनाथ चौधरी, श्री
शारदा दवी, श्रीमती
शारदा प्रसाद रावत, श्री
शारदा भक्त सिंह, श्री
शिवदास, श्री
शिव प्रसाद, श्री
शोबन सिंह जीना, श्री
श्यामदेव, श्री
श्याम नारायन तिवारी, श्री
श्याम बिहारी सिंह, श्री
श्याम सुन्दर गुप्त, श्री
श्रीचन्द्र, श्री
श्री नारायण, (उर्फ भुलई भाई)
श्रीराम द्विवेदी, श्री
संगम लाल, श्री
संग्राम सिंह, श्री
सत्यपाल सिंह यादव, श्री
सत्य प्रकाश, श्री
सत्यवीर, कुंवर
सन्त बख्श रावत, श्री
सियाराम सागर, श्री
सुखद राज सिंह, श्री
सुखपाल पाण्डेय, श्री
सुदामा प्रसाद गोस्वामी, श्री
सुनीता चौहान, श्रीमती
सुन्दरलाल, श्री
सुन्दर लाल दीक्षित, श्री
सुमेर चन्द्र गोयल, श्री
सुरेन्द्र कुमार कालरा, श्री (सिन्धु)
सुरेन्द्रपाल, श्री
सुल्तान सिंह, श्री
सूबेदार प्रसाद, श्री
सूरज प्रसाद, श्री
सूरवीर सिंह, श्री

सूर्यनाथ उपाध्याय, श्री
सूर्यमुखी शर्मा, श्रीमती
सोनपाल, श्री (उर्फ सोहन लाल पिपल)
सोहन बीर सिंह तोमर, श्री
सोहन लाल, श्री
स्वरूप कुमारी बख्शी, श्रीमती
हरदेव सिंह, श्री
हर प्रताप सिंह, श्री
हरि किशन श्रीवास्तव, श्री
हरिचरन यादव, श्री (एडवोकेट)
हरिपाल सिंह शास्त्री, श्री
हरिश्चन्द्र, श्री (उर्फ हरीश जी)
हरीराम वर्मा, श्री
हरी सिंह, श्री
हामिद रजा खां, श्री
हिम्मत सिंह, श्री
हुकम चन्द तिवारी, श्री
हुक्म सिंह परिहार, श्री

नोट :—हरिजन एवं समाज कल्याण मन्त्री श्रीमती चन्द्रावती भी सदन में उपस्थित थी।

विधान सभा सचिवालय उत्तर प्रदेश

आज प्रश्नोत्तर काल स्थगित किये जाने का प्रस्ताव

श्री राज मंगल पाण्डेय (जिला देवरिया)—

मान्यवर, सारे सदन की सहमति से मैं यह प्रस्ताव लाना चाहता हूं कि आज क्वेश्चन आवर न किया जाय और केवल जो शोक प्रस्ताव है उसी पर विचार किया जाय क्योंकि जिस व्यक्ति के बारे में आज हम लोग शोक प्रकट कर रहे हैं वह साधारण व्यक्ति नहीं था। उस के कार्यों की समीक्षा हम बाद में करेंगे। मेरा निवेदन है कि नेता सदन इस प्रस्ताव को स्वीकार करें और सदन के अन्य नेता भी इसे स्वीकार करें।

श्री उपाध्यक्ष—

माननीय सदन को स्वीकार है ?

संसदीय कार्य मंत्री (श्री मधुकर दिघे)—

स्वीकार है। मेरी बातचीत भी हो गई है।

श्री उपाध्यक्ष—

अब आप शोक का प्रस्ताव ले आयें।

श्री मधुकर दिघे—

मान्यवर, मैं आपकी आज्ञा से प्रस्ताव करता हू कि आज प्रश्नोत्तर काल को समाप्त कर दिया जाय और माननीय रवीन्द्र सिंह जी के संबंध में शोक प्रस्ताव ला कर.....

श्री उपाध्यक्ष—

सदन की सहमति हो चुकी है। आज प्रश्नों का घण्टा भी स्थगित किया जाता है। आप अब शोक का प्रस्ताव ले आयें।

विधान सभा सदस्य, श्री रवीन्द्र सिंह के निधन पर शोकोद्गार

*संसदीय कार्य एवं वित्त मंत्री (श्री मधुकर दिघे)—

मान्यवर, मुझे बहुत ही दुख के साथ आज सदन को यह सूचना देनी पड़ रही है कि इस सदन के.....

एक सदस्य—

मुख्य मंत्री जी आ गए....

श्री राज मंगल पाण्डेय (जिला देवरिया)—

जो बोल रहे हैं उन्हें बोलने दें।

श्री मधुकर दिघे—

गोरखपुर जिले के माननीय सदस्य और हमारे नौजवान साथी श्री रवीन्द्र सिंह जी का देहान्त कल रात को 11 बजकर 40 मिनट पर अस्पताल में हो गया। माननीय रवीन्द्र सिंह जी विधान सभा का यह जो सत्र शुरू होने वाला था इसी में हिस्सा लेने के लिए गोरखपुर से सुबह जो शाने-अवध गाड़ी आती है उस पर सवार होने के लिए स्टेशन पर सुबह पौने छः बजे पहुंचे थे कि एक आततायी ने उनको गोली मार दी। सभी प्रयत्नों के बावजूद, सभी की इच्छा के बावजूद, ईश्वर से लगातार प्रार्थना करने के बावजूद, रवीन्द्र सिंह जी को हम नहीं बचा पाये हैं।

मेरे लिए व्यक्तिगत तरीके से रवीन्द्र सिंह जी बहुत ही प्यारे मित्र थे। मुझसे उम्र में बहुत छोटे थे और हमारा सम्बन्ध बड़े भाई और छोटे भाई जैसा था। एक बार नही अनेक बार रवीन्द्र सिंह जी ने मेरे साथ सामाजिक प्रश्नों को लेकर, राजनीतिक प्रश्नों को लेकर, विद्यार्थियों और मजदूरों के आन्दोलनों को लेकर, भारतवर्ष में भारत की भाषा चले

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

और अंग्रेजी हटे इन प्रश्नों को लेकर विभिन्न अवसरों पर जेल की यातनाएं भुगती हैं। अभी इमरजेन्सी के दौरान भी वह मेरे साथ मीसा में बन्द थे। एक नौजवान होनहार हमारे बीच से चला गया। गोरखपुर जाने के 10–11 दिन पहले वह मेरे घर आये थे। रवीन्द्र सिंह जी मेरे घर आते थे तो एक घरेलू व्यवहार जैसा होता है वही उनके साथ मेरे यहाँ होता था। मेरी पत्नी के दिमाग में न जाने कैसे आया उन्होंने कहा "रवीन्द्र तुम अपने को बचाओ" मेरी पत्नी ने उनसे कहा, "देखो, राजनीति में काम करने वाले आदमी को रात-बिरात भी बाहर जाना पड़ता है। तुम अपनी रक्षा करो" तो उन्होंने कहा—"मेरे साथ शैडो रहता है, लोग रहते हैं। और देखें, मैं तो नौजवान हूं। भाई साहब मेरे साथ हैं। मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

श्री रवीन्द्र सिंह का वही आखिरी दर्शन था मेरे यहाँ जब वे साढ़े नौ बजे या दस बजे आए थे। आज पूरे प्रदेश और नवयुवकों को अत्यन्त दुख है। यहाँ छात्र जीवन में, लखनऊ और गोरखपुर विश्वविद्यालयों के छात्र संघों के अध्यक्ष और मन्त्री की हैसियत से और पूरे युवा आन्दोलन में उनकी जो भूमिका रही है, वह केवल महत्वपूर्ण ही नहीं, इतनी महत्वपूर्ण थी कि छात्रों पर, नौजवानों पर उनका एक छत्र अधिकार था। श्री रवीन्द्र सिंह कोई बात बोल दें तो तीसरे दर्जे में पढ़ने वाला नन्हा बालक भी रवीन्द्र सिंह को अपना नेता मानता था।

श्री रवीन्द्र सिंह स्वभाव से बहुत सरल थे। कभी-कभी राजनीतिक जीवन में जिस तरह से आक्षेप होते हैं, मुझे याद है कि जब मैं दिल्ली में पार्लियामेन्ट और विधान सभा की सदस्यता के लिए उनकी पैरवी करने के लिए पहुंचा तो उनके प्रति भी कई आरोप थे। लेकिन मैंने उस वक्त उनके बारे में यही कहा कि वह तो पान भी नहीं खाते, सिगरेट भी नहीं पीते। मेरे साथ बरसों जेल में काटे हैं। अभी डेढ़ साल पहले जब मेडिकल कालेज में जाते तो उनको सर दर्द की भयंकर बीमारी हो जाती थी। तो वह मेरे लिए पान ले आते थे, लेकिन स्वयं नहीं खाते थे।

मान्यवर, आज मुझे तो व्यक्तिगत रूप से अपने छोटे भाई का इस दुनिया से चले जाने पर महान अफसोस और दुख तो है ही, लेकिन पूरे प्रदेश के नवयुवकों और पूरे देश की आने वाली पीढ़ियों के लिए ऐसे व्यक्ति के चले जाने से जो क्षति हुई है और विशेषकर हमारे जिले के लिए, वह कभी नहीं पूरी हो सकती थी क्योंकि हमारे जैसे लोग जो पिछले 35 वर्षों से राजनैतिक और सामाजिक जीवन में रहे हैं, उनको इस तरह का साथी आने वाले दिनों में मिलना मुश्किल है। अफसोस है कि आज हम यहाँ है और श्री रवीन्द्र सिंह चले गए। मान्यवर, मैं उस दिवंगत आत्मा को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उनके शोक सन्तप्त परिवार तक मेरी, मेरे दल की और पूरे सदन की संवेदना प्रेषित करने के लिए आपसे निवेदन करता हूं और विश्वास करता हूं कि हम सभी लोग श्री रवीन्द्र सिंह जो काम छोड़ गए हैं, अपने देश के नवयुवकों के मार्ग दर्शन करने, उनके जीवन का सुधार करने का ताकि वे देश का भार सम्भाल सकें, उसको हम करें। इन शब्दों के साथ मैं अपनी तथा अपने साथियों की उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

*श्री राज मंगल पाण्डेय—

मान्यवर, कितना दुख है कि आज इस सदन में हम जिस व्यक्ति की चर्चा करते हैं, वह हम लोगों के बीच में नहीं रहा। एक नौजवान जिसकी मुश्किल से 30 साल भी उम्र न रही हो, उसका सामाजिक और राजनैतिक जीवन कितना उज्ज्वल था कि उस पर कोई भी कलंक नहीं लगा था। हम राजनैतिक जीवन में कोई न कोई आक्षेप करते रहते हैं, लेकिन जितना व्यक्तिगतरूप से मैं उस व्यक्ति को जानता हूं, निश्चयपूर्वक कह सकता हूं कि सामाजिक और राजनैतिक जीवन उस व्यक्ति का बिल्कुल निष्कलंक रहा। वह नवयुवकों

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री राज मंगल पाण्डेय]

के लिए प्रेरणा के स्रोत थे। हम लोग जिसको छोटा भाई मानते थे, वह हम लोगों का बड़े भाई की तरह आदर करता था और कभी कोई बात कह भी दी गयी तो भी उसने कभी कोई वैसी धृष्टता नहीं की कि बुजुर्गों के दिल में चोट पहुंचे। उस व्यक्ति के बारे में जितनी भी प्रशंसा की जाय, उसके कार्यों की जितनी भी सराहना की जाय, वह थोड़ी है। कम उम्र में ही केवल गोरखपुर में ही नहीं, उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में अपनी विचारधारा से, अपने उज्ज्वल चरित्र से एक बहुत बड़ी छाप उन्होंने छोड़ दे रखी है। नवयुवकों के लिए उन्होंने बहुत कुछ कार्यक्रम बनाए जिनमें नवयुवकों का विश्वास था और आने वाली पीढ़ी बहुत ही अच्छे रूप में उनको स्मरण करती रहेगी। श्री दिघे जी ने कहा कि छोटे से छोटे दर्जे का बालक भी उनसे प्रभावित था। अन्याय चाहे सामाजिक क्षेत्र में हो या राजनीतिक क्षेत्र में, वह सदैव उसके विरुद्ध लड़ते रहे। अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन में उनकी बहुत बड़ी भूमिका रही। देश की आजादी के बाद जो भी कार्य उसको सुरक्षित रखने और सामाजिक जीवन को ऊंचा उठाने के लिए होने चाहिए उनमें उनका विश्वास रहा। यहाँ भी विधान सभा में अपने सुन्दर आचरण, ओजस्वी वक्तृता द्वारा उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। मृदुभाषी होने के नाते सभी के दिल को जीता। उनकी यह सब बातें अविस्मरणीय हैं। उनकी जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। वह सदैव दूसरों के लिए प्रेरणा के स्रोत थे। उनमें अभूतपूर्व शक्ति थी और संयम था जिसके कारण बड़ी से बड़ी चीज को करने का भी साहस रखते थे। ऐसे व्यक्ति के न रहने से जो क्षति हुई उसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। मैं अपने को नेता सदन की भावनाओं से सम्बद्ध करते हुए आपसे निवेदन करूंगा कि आप शोक सन्तप्त परिवार को हमारी संवेदना पहुंचा दें। साथ ही ईश्वर से प्रार्थना है कि वह उनके शोक सन्तप्त परिवार को इस असीम दुख को सहन करने की शक्ति दे। हमारी सच्ची श्रद्धांजलि उनके लिए यह होगी कि सरकार उनके बच्चों को इस संदर्भ में देखें कि श्री रवीन्द्र सिंह ने सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर जो भूमिका निभायी है उसी प्रकार वे भी हमारे और आपके बीच एक उदाहरण बन सकें।

*श्री नारायण दत्त तिवारी (जिला नैनीताल)—

श्रीमन्, प्रदेश की राजनीति की और हमारी वर्तमान युवा पीढ़ी के नेतृत्व में मार्ग-दर्शक, माग-सूचक, देदीप्यमान, उदीयमान नक्षत्र हमारे मध्य से उठ गया। श्री रवीन्द्र सिंह जी आज की युवा पीढ़ी के सर्वमान्य प्रतीक थे। वर्तमान युवा पीढ़ी की आकांक्षाएं और वांछाएं अग्रणीय होते हुए भी देश व प्रदेश के भविष्य की कल्पनाएं उनके यौवन में साकार थीं श्रीमन्, भविष्य में देश और प्रदेश के भार को जो सम्भालेंगे ऐसे युवा नेताओं से सम्पर्क करने का प्रयास हमारा रहता है। इसी प्रक्रिया में श्री रवीन्द्र सिंह के व्यक्तित्व का अध्ययन करने की चेष्टा मैंने की। पिछले कई वर्षों में जब से मैंने उनसे परिचय प्राप्त किया मैंने पाया कि उनमें एक क्रान्तिकारिता की भावना थी, जो यथास्थितिवाद है उसकी रूढ़ियों को तोड़ने की उत्कृष्ट अभिलाषा उनमें विद्यमान थी। एक क्रान्तिकारी में इच्छा होती ह तेजी से अग्रसर होने की। जीवन के सभी क्षेत्रों में, चाहे राजनीतिक क्षेत्र हो अथवा सामाजिक अग्रसर होने के लिए जो बढ़ती हुई आकाँक्षों और वाँछा किसी क्रांतिकारी में प्रतिबिम्बित होती हैं वह रवीन्द्र सिंह जी के व्यक्तित्व से प्रस्फुटित होती थी। हम में से प्रत्येक को उनके व्यक्तित्व की यह भव्य झाँकी देखने को मिली और इसलिए शब्द ढूढ़ने में कठिनाई होती है कि किस प्रकार उनको श्रद्धाँजलि अर्पित की जाय, जिस प्रकार किसी उन्मत्त तथा विकृत मस्तिष्क वाले पागल ने अपने पागलपन में एक ऐसे हमारे साथी को हमारे बीच से छीन लिया उसे देख कर दिल मसोस कर रह जाना पड़ता है और हमें अपनी सारी परिकल्पनाओं तथा व्यवस्थाओं पर चिन्ता होने लगती है। हमारा आपस का राजनीतिक विरोध अथवा किसी महत्वपूर्ण नीति के विषय में कैसे हम स्थिर हो सकते हैं, कोई स्टैण्ड

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

हो सकते हैं, किसी बात को बलपूर्वक अपने को व्यक्त करना चाहें, अन्याय के विरुद्ध समूहों और वर्गों के विरुद्ध अगर मजबूती से कोई हम स्टैण्ड लेना चाहें तो ऐसी जोखिम उठाना पड़ता है जैसे रवीन्द्र सिंह ने उठाया और अपने जीवन की आहुति दे दी, ऐसे तत्वों से लड़ते हुए जो हिंसा में विश्वास करते हैं और इस प्रकार राजनीतिक जीवन को अभिशप्त और कलंकित करते हैं। यह विवाद का अवसर नहीं है।

यह अवसर केवल श्रद्धांजलि अर्पित करने का है। मैं समझता हूं कि उनके जीवन के प्रति सबसे अच्छी श्रद्धांजलि हम तभी दे सकते हैं जब हम यह निर्णय करें कि हम अपने राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन में हिंसक तत्वों के सामने किसी भी स्तर पर आत्मसमर्पण नहीं करेंगे और न हम उनके सामने झुकेंगे और न किसी हालत में ऐसे तत्वों को प्रोत्साहन ही देंगे और हमारे सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन को कलंकित करने वाले ऐसे तत्व आगे नहीं बढ़ने पायेंगे। हमारी जो सामाजिक तथा राजनीतिक मान्यताएं हैं उनको तोड़ कर ऐसे तत्व किसी प्रकार पनपने न पाये यह हमारी सबसे बड़ी श्रद्धांजलि रवीन्द्र सिंह जी के प्रति होगी।

आज प्रदेश का छात्र अनाथ हो गया है। वह छात्र तथा युवा नेता भी थे। आज वह अपने को कमजोर तथा असहाय महसूस कर रहा है। मेरा विनम्र आग्रह है कि मेरे दल कांग्रेस (आई0) की तरफ से उनके शोक संतप्त परिवार को हमारी संवेदना पहुंचा दें, दर्द और टीस दिल में बने रह जायेंगे। उजाले अपनी यादों के हमारे पास रह जायेंगे, न जाने किस गली में जिन्दगी की शाम हो जाय।

*श्री ऊदल (जिला वाराणसी)—

मान्यवर, श्री रवीन्द्र सिंह के बारे में जो विचार संसदीय कार्य मन्त्री, नेता विरोधी दल तथा माननीय तिवारी जी ने व्यक्त किए हैं मैं उनसे अपने को तथा अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। रवीन्द्र सिंह जी का जन्म 30 दिसम्बर, 1949 को हुआ था और 30 अगस्त, 1979 को उन्होंने तीस वर्ष भी पूरे नहीं किये जब उनकी मृत्यु हो गयी। रवीन्द्र सिंह अपने विचार तथा धुन के पक्के थे जैसा कि यहां देखने को मिलता था। जैसा माननीय नेता विरोधी दल ने भी कहा जिस बात को वह सही समझते थे अगर उस पर कोई आंच आती थी तो वह उसके संघर्ष के लिए मर मिटते थे। यहां सत्ता पक्ष में रहते हुए सरकार के खिलाफ किस तरह से वह संघर्ष करते थे वह हम सभी को देखने को मिलता था। कभी-कभी तो झगड़े की नौबत आ जाती थी। इस प्रकार वह दृढ़ विश्वासी थे, लगनशील व्यक्ति थे लेकिन स्वभाव उनका बहुत ही सरल था। मुझे भी उनसे बातचीत करने का रोजाना ही मौका मिलता था जिन दिनों सदन चलता था, देखने को मिलता था कि वे एक सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। उनमें दृढ़ प्रतिज्ञा थी। कुछ चीजों में उनको आस्थाएं थीं और उनके लिए वे संघर्षशील थे।

छात्रों के युवा संगठन के एक मात्र नेता थे वे इधर 3/4 वर्षों से थे। पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक-एक छात्र चाहे वह किसी भी कालेज का हो, यूनिवर्सिटी का हो या किसी दल से सम्बद्ध हो सब उनसे परिचित थे। मैं समझता हूं कि इतनी अल्प आयु में ही उनके उठ जाने से सारे उत्तर प्रदेश को बहुत बड़ा नुकसान हुआ है और खास तौर से जो युवा पीढ़ी है जैसा कि संसदीय कार्य मन्त्री ने कहा एक पीढ़ी जो कि पहली पीढ़ी थी, उनके दो चार प्रतिशत ही लोग रह गये होंगे 'दूसरी पीढ़ी भी जा रही है और एक आने वाली पीढ़ी के लिए जिसके लिए एक मार्ग-दर्शक के रूप में रवीन्द्र सिंह उभर रहे थे उनको छद्म असामाजिक तत्वों ने हमारे बीच से छीन लिया। हमेशा इस बात का कायल रहा हूं कि हिंसा की राजनीति की जितनी भी निन्दा की जाय, वह कम है। आज मैं यह देख रहा हूं कि हिंसा की राजनीति का

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री ऊदल]

जीवन के किसी भी क्षेत्र में हो, वह बढ़ रही है। जनजीवन आज सुरक्षित नहीं रह गया है। श्री रवीन्द्र सिंह जी के हमारे बीच से उठ जाने से हम सबको बहुत बड़ा क्लेश है। वे एक बहुत अच्छे वक्ता भी थे। उनकी बहुत सी चीजों पर पकड़ भी थी। श्रीमन्, उनकी बातें याद आती रहेंगी। वे हमारे बीच में नहीं हैं। उनके परिवार का क्या हाल होगा? अगर उनके माँ और पिता होंगे, स्त्री होगी तो उनकी क्या हालत होगी? कितने दुखी वे होंगे, इसका वर्णन करना बहुत मुश्किल है। आज उनको शांति और धैर्य की आवश्यकता है। ऐसी स्थिति में श्रीमन्, मैं अपने और अपने दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और प्राथना करता हूं कि शोक संतप्त परिवार को इस घोर विपत्ति को सहन करने की क्षमता मिले। आप उनके शोक संतप्त परिवार को हमारी श्रद्धांजलि पहुंचाने की कृपा करें और उनके इष्ट मित्रों और दोस्तों को भी प्रस के माध्यम से हमारी सद्भावना पहुंचा दें।

श्री लक्ष्मी शंकर यादव (जिला जौनपुर)—

श्रीमन्, श्री रवींन्द्र सिंह जी हमारे बीच नहीं है और इस अवसर पर माननीय वित्त मंत्री जी, नेता विरोधी दल, माननीय तिवारी जी और माननीय ऊदल जी ने जो कुछ विचार प्रकट किये हैं, मैं उनसे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। सबने और खासतौर से नेता विरोधी दल ने उनके जीवन के विषय में काफी विस्तार से बताया वैसे हम सब यहाँ देखते थे और पहले से भी जानते थे कि वे छात्रों और युवा समाज के एक प्रभावशाली नेता हो गये थे यह केवल इस नाते कि वे अपने विचारों के दृढ़ थे। उनका स्वभाव सरल था, वे नम्र और व्यवहार कुशल थे। उनकी निर्मम हत्या से हम बहुत दुखी हैं। मेरे ख्याल से इसी मौजूदा सदन में इस तरह की हत्या का यह तीसरा मामला है। इस तरह की प्रवृत्ति बढ़ रही है, जिस पर सोचने की बात है। इस प्रवृत्ति को हम रोक सकें, चाहे जैसे भी रोकें, इसके लिए रास्ता निकाल सकें, वह निकाला जाय तो मैं समझता हूं कि रवीन्द्र सिंह जी की आत्मा को बहुत बड़ी शान्ति मिलेगी और हमारी तरफ से वह सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी। उनके गुणों के विषय में, उनके प्रभाव के विषय में, उनके व्यवहार के विषय में उनकी योग्यता के विषय में काफी कहा गया और जितना भी कहा गया वह कम है और जितना भी कहा जाय वह कम होगा। मैं निवेदन यही करूंगा कि उनके प्रति सही असली श्रद्धांजलि यही होगी कि इस हिंसक प्रवृत्ति को रोका जाय, इस पर सोचा जाय, जैसे भी हो इस पर विचार करके इसे समाप्त किया जाय।

मान्यवर, सबको दुख है, हम भी अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और आपसे निवेदन करते हैं कि उनके शोक सन्तप्त परिवार को हमारी तरफ से भी श्रद्धांजलि भेजने की कृपा करें। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उनके शोक सन्तप्त परिवार को बल दे कि वह इस दुख को सहन कर सकें और उनकी आत्मा को शान्ति मिल सके।

श्री राम आसरे वर्मा (जिला हरदोई)—

मान्यवर, माननीय रवीन्द्र सिंह जी हमारे बीच में नहीं रहे। वह युवा जगत के एक ऐसे नक्षत्र थे जिससे अनेक युवा हृदय प्रभावित और रोशन थे। वह युवा भावनाओं के प्रतीक थे। उनकी हत्या को अकेली उन्हीं की हत्या मानना उपयुक्त न होगा। म समझता हूं कि वह अनेक भावनाओं की हत्या है जिसके वह प्रतीक थे। प्रदेश का जन मानस इस होनहार युवा से आशाएं लगाये बैठा था। यह हत्या उन आशाओं की हत्या है। मान्यवर, छात्र आन्दोलनों के माध्यम से आज से नहीं कई वर्षों से रवीन्द्र सिंह जी से मेरा सम्पर्क था और उन्हें छात्र आन्दोलनों का नता माना जाता था। उनके लिए जितनी बात की जाय वह कम होगी। वे हर जुल्म और अन्याय के खिलाफ अगुवाई करने की तमन्ना रखते थे और करते भी थे। इस सदन के अन्दर उनकी परफारमेंस देखने को मिली। अन्याय और जुल्म के तथा गलत नीतियों के खिलाफ एक मिसाल वह प्रस्तुत करते थे।

मान्यवर, ज्यादा कुछ न कह कर मैं इतना ही कहूंगा कि जो उद्गार एक ऐसे होनहार युवा नेता की हत्या के बारे में माननीय दिघे जी ने, माननीय नेता विरोधी दल ने, माननीय तिवारी जी ने, माननीय ऊदल जी ने, माननीय यादव जी ने व्यक्त किए हैं, मैं अपने को और अपने प्रगतिशील दल को उनसे सम्बद्ध करते हुए आपसे आग्रह करूंगा कि हमारी श्रद्धांजलि के पुष्प उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री रियासत हुसैन (जिला मुरादाबाद)---

श्रीमन्, आज हमारे बीच में इस सदन के होनहार माननीय सदस्य, श्री रवीन्द्र सिंह जी नहीं हैं। इस सम्बन्ध में माननीय दिघे जी, माननीय नेता विरोधी दल और अन्य दलों के नेताओं ने जो अपने विचार प्रकट किए हैं उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं। श्रीमन् जब मैं इस बार इस विधान सभा मे चुन कर आया तो मैंने खासतौर से कि इस विधान सभा के गठन में और पिछली विधान सभाओं के गठन में थोड़ा अन्तर पाया। इस विधान सभा में नौजवान और छात्रों का प्रतिनिधित्व करीब-करीब प्रदेश के अन्दर जितनी भी यूनिवर्सिटीज हैं उन सबके यूनियनों के प्रेसीडेंट जो अच्छी तरह से छात्रों और नौजवानों का प्रतिनिधित्व कर सकते है, आये और उन्हीं में माननीय रवीन्द्र सिंह जी भी एक नौजवान छात्र नेता की हैसियत से आये थे। जब कभी भी मेरे सामने वह आते थे तो उनसे बड़े होने के नाते जो आदर होना चाहिए था वह मुझे देते थे, वही हंसता हुआ चेहरा मैं आज भी देखता हूं और मालूम होता है कि उनका वह चेहरा हमारे सामने फिर रहा है।

श्रीमन्, वह हमारे बीच में नहीं हैं। मैं ज्यादा क्या कहूं, सिर्फ यही कहूंगा कि—'हसरत उन गुलों पर है, जो बिन खिले मुरझा गये।' मैं अपनी और अपनी पार्टी की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना है कि आप हमारी संवेदनाओं को उनके परिवार वालों तक भेजने का कष्ट करें।

*श्री भगवती प्रसाद सिंह (जिला फैजाबाद)---

मान्यवर, आज हमारे बीच से श्री रवीन्द्र सिंह को क्रूर शक्तियों ने उठा लिया। मगर यह एहसास नहीं हो रहा है। उनका हंसमुख चेहरा इस माननीय सदन में सबको बड़ा प्यारा था। मान्यवर, रवीन्द्र जी पूर्वांचल के नवयुवक वर्ग और छात्रों के हृदय-सम्राट थे। रवीन्द्र जी का जिन हालात में और जिस तरह स हमारे बीच से विछोह हुआ है, वह भी बड़ा दुखदायी है। वह जिस अदब से देखते थे, वह भी भूलने वाला नहीं है। अजीब घटना है। जब यह सुनने में अखबारा में आया कि उनको गोली लगी, दिल को धक्का लगा जब फिर अखबारों से मालूम हुआ कि उनको फालिज लग गयी है हमारा दिल बैठने लगा आज यह खबर मिली कि रवीन्द्र जी हमारे बीच में नहीं है। उनके दुखद अन्त से पूरे पूर्वांचल और उत्तर प्रदेश के सभी हिस्सों में एक अजीब सी भावना पैदा हो गयी है, लोगों में कि अब कोई भी जन-प्रतिनिधि या कोई ऐसा व्यक्ति जो अन्याय का विरोध करेगा, जो आततायियों का विरोध करेगा, वह अपने को महफूज नहीं रख सकता। मान्यवर, मैं अपने को और अपनी पार्टी को माननीय दिघे तथा अन्य नेताओं ने जो शोकोद्गार प्रकट किए हैं, उनसे सम्बद्ध करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और मैं चाहूंगा कि उनके शोक सन्तप्त परिवार तक आप हमारी भावनाओं को भेज दें।

श्री ए० सी० ग्राइस (नाम निर्देशित आंग्ल भारतीय)---

उपाध्यक्ष जी, मुझे बड़ा अफसोस है, इस नवजवान के जाने से हमें काफी चोट लगी है। जो हमारी कम्युनिटी के गोरखपुर कालेज के प्रिंसिपल हैं, वह हमसे उनकी सराहना और सिफारिश किया करते थे, वह उनकी तमाम क्वालिटीज से बड़े प्रभावित थे। जब भी गोरखपुर सेन्ट एण्ड्रयूज कालेज के प्रिंसिपल यहाँ हमसे मिलने आते थे, तो वह सदा हमसे—

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री ए० सी० ग्राइस]

इस लड़के की सिफारिश किया करते थे और उनकी हर तरह से प्रेज करते थे। वह बड़ा सीधा और इन्टलीजेन्ट लड़का था और जो गलती सही है, उसे उसको मानने में कोई गुरेज नहीं रहता था। जब वहाँ के कालेज में झगड़ा हो गया तो मुझे यहाँ मालूम हुआ और उस पर मुझे चिन्ता हुई तो उसने (रवीन्द्र) कहा कि मैं वहाँ जा रहा हूं और उसको ठीक करा दूंगा। उसके जाने के बाद वहाँ से प्रिंसिपल का टेलीफोन आया कि यहाँ रवीन्द्र आकर मिल गया है और यहाँ पर सब शान्त हो रहा है। मुझे मालूम देता है जैसे आज हमारे बेटा नहीं आया और आज वाकई में एसा मालूम दे रहा है। हमारे जो साथी थे, हमारे हम उम्र या हमसे छोट उनके जाने से इतनी तकलीफ हमें कभी नहीं हुई, जैसे इस लड़के के जाने से हुई है। हम सोच रहे थे, हम तो रिटायर हो ही जायेंगे, हमेंउम्मीद थी,इस लड़के के हाउस में रहने से कभी न कभी वह इस हाउस का मालिक हो जायगा, या यहाँ कुछ न कुछ गवर्नमेंट में हो जायगा। उसके उठ जाने से हमें बहुत काफी लास है। यहाँ जो उनकी फैमिली के लिए कन्डोलेन्स रिजोल्यूशन पास हो रहा है, उसे हमारे और हमारी कम्युनिटी की तरफ से भी आयद कर दीजिए।

*श्री शतरुद्र प्रकाश (जिला वाराणसी)—

मान्यवर, पिछल तीन दिनों से जिस बात की कल्पना करने से मन सिहर जाता था एक सिहरन हो जाती थी, वही बात हो गयी। कल रात को करीब साढ़े ग्यारह बजे के आसपास श्री रवीन्द्र सिंह का देहान्त हो गया। मान्यवर, कहावत है कि मौत बहुत क्रूर और निर्मम हुआ करती है और बिना बताये आ जाया करती है। लेकिन कुछ लोगों की मौत मन की इस तरह झकझोर देती है उसका बयान करना भी मुश्किल हो जाता है। आज जो दर्द, जो सदमा श्री रवीन्द्र सिंह की मौत से पहुंचा है उसका शब्दों में बयान करने के लिए न शब्द विन्यास संजो पा रहा हूं, न वाक्यों को ठीक किया जा पा रहा है। मान्यवर, जहाँ तक मुझे जानकारी है, श्री रवीन्द्र सिंह विधान सभा की कार्यवाही में भाग लेने के लिए आ रहे थे। गोरखपुर स्टेशन पर उनको गोली मार दी गयी। श्री रवीन्द्र सिंह से काफी नजदीक का सम्बन्ध रहा था। इस विधान सभा में अगल बगल बठने का बहुत ज्यादा मौका मिला था। अक्सर विधान सभा आने के पहले और यहाँ से जाने के बाद जब दारुलशफा जाते थे तो बैठ कर देश के भविष्य के बारे में काफी बातचीत हुआ करती थी। लेकिन ऐसे मौके पर एक अकेलापन महसूस हो रहा है। रवीन्द्र सिंह, एक उत्साही और लगनशील होने के साथ दृढ़ संकल्प के नौजवान थे। राष्ट्रीय आन्दोलन के पुर्नजागरण की जो अवरुद्ध धारा थी, उस की बुनियाद पर आधारित छात्र आन्दोलन, श्री रवीन्द्र सिंह की राजनीति की बुनियाद रही है। आजाद भारत में अंग्रेजी भाषा के गुलामी क खिलाफ छात्र आन्दोलनों क नेतृत्व में उनका जो योगदान रहा है, वह अविस्मरणीय है।

शिक्षण संस्थाओं की सहायता और शिक्षण संस्थाओं के संचालन, छात्रों की चिकित्सा के लिए आन्दोलन, श्री रवीन्द्र सिंह की बहुत बड़ी देन है। छात्रों में उनकी लोक प्रियता का अन्दाज इसी बात से लगता है कि गोरखपुर विश्वविद्यालय के छात्र संघ के अध्यक्ष होने के बाद जब वह लखनऊ विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लिए आये तो वहाँ भी लखनऊ विश्वविद्यालय क छात्र संघ के अध्यक्ष चुने गये। मान्यवर, छात्र आन्दोलन की बुनियाद पर आधारित सार्वजनिक जीवन में पदार्पण करने के बाद, श्री रवीन्द्र सिंह ने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था में आमूल परिवर्तन करने के लिए 1974 में लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा आहूत सम्पूर्ण क्रान्ति के आन्दोलन में एक अभूतपूर्व योगदान दिया है। मान्यवर, आपातकाल में लोकतन्त्र क मूल्यों की रक्षा के लिए तानाशाही के खिलाफ उन्होंने एक लम्बी

*वक्ता न भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

जेल यात्रा भी की। उसके पहले भी वह अक्सर अन्याय के खिलाफ, जुल्म के खिलाफ, जेल यात्रा करते रहे। उनका सारा जीवन जो बहुत कम वक्त का रहा है जिसकी खूबियों को गिनाने का पूरा समय भी पूरा नहीं हो पाया, पूरा का पूरा जीवन उनका संघषपूर्ण रहा है। उनकी हत्या समाज में बढ़ती हुई हिंसा जो है, उसका स्पष्ट प्रमाण है। जो बढती हुई हिंसा है वह सार्वजनिक व्यक्ति को किस प्रकार से ग्रसित कर रही है, रवीन्द्र सिंह जी की मौत उसी का उदाहरण है। उनकी मौत न इस शासन को चुनौती देती है न सार्वजनिक जीवन के हर व्यक्ति को चुनौती है बल्कि सम्पूर्ण कानून व्यवस्था को चुनौती है, जिसका हमें मुकाबिला करना होगा। ऐसे मौके पर हम लोग बहुत कुछ कर सकते हैं, लेकिन रवीन्द्र सिंह को दुबारा ला नहीं सकते हैं। ऐसे मौके पर उनको श्रद्धांजलि देना ही, उनको याद कर लेना हीं हमारा असफल प्रयास है। मैं आपसे निवेदन करूंगा कि जो माननीय वित्त मन्त्री जी, नेता विरोधी दल, तिवारी जी, लक्ष्मी शंकर यादव जी, रियासत साहब और भगवती सिंह जी ने जो अपने विचार व्यक्त किए हैं उनसे मैं अपने को भी सम्बद्ध करता हूं।

श्री उपाध्यक्ष—

माननीय संसदीय कार्य एवं वित्त मंत्री जी, माननीय नेता विरोधी दल, नेता कांग्रेस (आई0), सर्व श्री ऊदल, लक्ष्मी शंकर यादव, राम आसरे वर्मा, रियासत हुसैन, भगवती प्रसाद सिंह, ए0 सी0 ग्राइस तथा शतरुद्र प्रकाश जी ने हमारे साथी श्री रवीन्द्र सिंह के बारे में उदगार यहाँ पर व्यक्त किए हैं, मैं अपने को तथा सदन को उससे सम्बद्ध करता हूं। आज सारा सदन दुखित है। उनका इतना अच्छा चेहरा, उनके मुख पर उनकी मुस्कराहट बड़ी अच्छी दिखती थी। उनका स्थान सूना हो गया है और जो स्थान रिक्त हुआ है उसकी अब पूर्ति नहीं हो सकती है। श्री रवीन्द्र सिंह जी सदैव विश्वविद्यालय तथा शिक्षण संस्थाओं क मामले लेकर मेरे पास आया करते थे। बड़ी अच्छी छाप उनकी पड़ती थी और अब ऐसा लगता है कि जो स्थान उनकी मृत्यु के कारण सूना हो गया है उसकी पूर्ति नहीं हो सकती है। मैं सदन की भावनाओं को तथा सभी नेताओं की भावनाओं को उनक शोक संतप्त परिवार तक उनकी शान्ति के लिए पहुंचा दूंगा। आप सब लोग 2 मिनट खड़े होकर उनकी आत्मा की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें।

(इसके उपरान्त सभी सदस्य अपने-अपने स्थान पर 2 मिनट के लिए मौन खड़े हुए।)

आज का कार्यक्रम ३ सितम्बर को लिये जाने की सूचना

श्री उपाध्यक्ष—

अब आज का जो कार्य-क्रम है वह 3 सितम्बर को लिया जायेगा। उस दिन 9 बजे कार्य मंत्रणा समिति की बैठक होगी और उसमें हम आगे की कार्यवाही के बारे में निश्चय कर लेंगे। कल परसों, दोनों दिन, सदन की बैठक नहीं होगी।

अब हम उठते हैं और 3 तारीख को 11 बजे फिर बैठेंगे।

(इसके बाद सदन 11 बज कर 45 मिनट पर सोमवार, 3 सितम्बर, 1979 के 11 बजे तक के लिए स्थगित हो गया।)

लखनऊ:
31 अगस्त, 1979

सत्य प्रिय सिंह,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

पी0 एस0 यू0 पी0—एल0 330 वि0 सभा (573)—1980—835।